शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

कहानियों में ग्रामीण जीवन : 'मोहनदास' के संदर्भ में

योग्यता मिश्रा (शोधार्थी)
श्री क्लाथ मार्केट इंस्टीट्यूट आफ प्रोफेशनल स्टडीज़
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

भारत कृषि प्रधान देश है। आज भी कहा जाता है कि असली भारत गाँव में बसता है। भारत की आत्मा गाँव में बसती है। उसी आत्मा के दर्शन यदा-कदा नहीं बल्कि सदैव हम अपनी कथाओं में , कविताओं में, गीतो में, छंदो में करते रहे हैं। यह गाँव का सौंधापन ही है , जो हमें आज तक मिट्टी की खुशबू से जोड़े हुए है वरना मशीनी युग में कल-कारखानों के धुएँ से कब का हमारा जीवन स्याह हो चुका होता। प्रस्तुत शोध पत्र में उदय प्रकाश की कहानी 'मोहनदास' का विश्लेषण किया गया है

प्रस्तावना

साहित्य सदैव आत्मा के दर्शन पर केन्द्रित रहता है। अतः यही तथ्य भारत की आत्मा दर्शन पर भी लागू होता है। साहित्य में ग्रामीण परिवेश के दर्शन पर भी लागू होता है। साहित्य-सागर में मिलने वाली विभिन्न धाराओं में किस्सागोई की मुख्य धारा 'कहानी' का अपना महत्व है। इसके रूप रंग में अंग-अंग में नवीनता व्याप्त है। जिसके चलते यह जिस परिवेश का बखान कर रही है उस रंग, खुशबू, रस को धारण कर लेती है। आसानी से श्रोता या पाठक के मन को उस धारणा में जीने पर मजबूर कर देती है कि वह भी उस परिवेश को जी रहा है , जिसे कहानी बता रही है।

कहानीकारों की लंबी फेहरिस्त है जिन्होंने भारतीय ग्रामीण परिवेश , बोलचाल, रहन-सहन, रीत-रिवाजों की भिन्नता , शोषण-पोषण, सुंदरता, कुरूप संभावनाएँ आदि को शब्द चित्र द्वारा हर रंग रूप में रेखांकित किया है। जिस भी कथाकार या कहानीकार ने गाँव को अपना कैनवास चुना वह एक कुशल चित्रकार की कूँची की तर्ज पर कलम चलाता गया। गाँव को नए-पुराने सभी प्रकार के अच्छे-बुरे अनुभवों के आधार पर गढ़ता गया। प्रेमचन्द को ग्रामीण परिवेश की कहानियों का प्रणेता, कहना सौ फीसदी सही होगा। उनकी अधिकांश कहानियों में ग्राम जीवन जीवित दिखता है। गाँव की विभिन्न समस्याओं को उन्होंने उठाया। उनके पश्चात् कई कथाकारों ने ग्रामीण जीवन का जुड़ाव अपनी कहानियों द्वारा दिखलाया। 'नई कहानी' के दौर में भी ग्रामीण अंचल की कहानियाँ लिखी गई। लेखकों की श्रेणी ने छठे दशक के आरंभ में हिन्दी कहानी में ग्रामीण अंचल की कहानियों द्वारा पाठकों को ग्राम जीवन की कई झलकियों के दर्शन कराए। शिवप्रसाद सिंह, मार्कण्डेय, फणीश्वरनाथ रेणु के नाम प्रमुख है।

'मोहनदास' में ग्रामीण जीवन

ठीक इसी प्रकार की कुछ रेखाएँ श्री उदय प्रकाश जी द्वारा लिखी कथा 'मोहनदास' खींचती है। तब अपने परिवेश के अंतर्गत ग्रामीण जीवन का सच, कहानी के लिखे जाने के दौर का ज्ञात होता है। उदय प्रकाश द्वारा ग्रामीण - आदिवासी परिवेश

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

की जुझारू प्रवृत्ति को दर्शाती , इस कहानी में ग्रामीण निचले तबके के उच्च शिक्षित बेरोजगार युवा की व्यथा-कथा सामयिक परिवेश के अनुरूप गढ़ी गई है। कथा में कसावट उसके संवादों के आंचलिक बोली के प्रयोग से बनी है।

ग्राम्य जीवन की सोच , वर्गभेद, खान-पान की वैविध्यता सभी कुछ इस कथा में उदय जी द्वारा दिखलाया गया हैं इस कहानी में ग्रामीण परिवेश को साथ लेकर चल रहे मोहनदास और उसकी तमाम विषमताएँ किसी भी संवेदनशील पाठक को झकझोरने के लिए काफी है।

कथा का गाँव 'पुरबनरा', इस गाँव को गढ़ने में लेखक ने पूरी सावधानी से काम लिया। गाँवों में आम बोलचाल में पुकारे जाने वाले नाम , कागज-पत्री पर लिखे जाने वाले नामों का चयन जाति व रहन-सहन के अनुरूप है। यदि उच्च वर्ग का पात्र गढ़ा है तो उसकी जबान का एक-एक शब्द वजनी और उच्च वर्ग के घमंड से लबरेज बताया गया और पूरे ग्राम्य परिवेश में उसकी साख व स्थिति भी दर्शायी गई।

यहाँ लेखक ने ग्रामीण जीवन की छाप बातचीत , पात्रों के नाम जैसे मोहनदास , काबादास, पुतली आदि द्वारा दर्शायी है तथा संवादों में मिलने वाला ठेठपन ही कहानी को ग्रामीण परिवेश की होने का गौरव प्रदान करता है , "रोउते काहे ल हस अंधरी ? मोर ल अबे मरै क नहीं हबै। देव दास ल काज अऊ सारदा ल गउना कर के मरिहों। झै रो ...!"2

गाँव की सुंदरता बढ़ाती एक नदी जिसका नाम 'कठिना' दिया गया। गाँव की पालनकर्ता की तरह दर्शायी गई इससे जुड़े रीति रिवाज मौरम की मार आदि सभी कुछ सधे-सधाए तरीके से ग्राम का ग्रामीण रूप निखारती है। " मोहनदास ने गर्मियों में गाँव के दूसरे लोगों की तरह , नदी की रेत मे खीरा , ककड़ी, तरबूज, खरबूज लगाने का काम किया।"3

मोहनदास चूँकि गाँव का अदना कबीरपंथी जीव बताया गया, परन्तु फिर भी उसके जीवन में भी आंचलिक रीति-रिवाजों का भार होता है। जब मोहनदास के यहाँ पुत्र का जन्म होता है , और उसे भी अपनी आर्थिक तंगी के चलते इन रस्मों के खर्च का ध्यान आते ही सिहरन का अहसास होता है। तो वह कुछ यूँ विचार करता है , "कस्तूरी के लिए महीने भर देसी सोंठ , गुड़ तथा घी और हल्दी के साथ भात। छठी , बरहों और पसनी में नात-रिश्तेदारें को खिलाने पिलाने का खर्चा ऊपर से।"4

लेखक ने इस गाँव में सिर्फ खालीपन या आर्थिक तंगी का ही बखान नहीं किया , बल्कि गीत , उल्लास के आंचलिक गीतों व संवादों द्वारा कहानी में सरसता भी घोली है।

"चोला तर जई रामा...../ तन तर जई रामा / सत गुरू साखी ला...../ चोला तर जई...../ ...चोला तर जई...."5

गाँव के अपने देवी देवता का पूजन पाठ भी कहानी को पूर्ण रूप देने का सटीक कार्य कर रहा है। मोहनदास द्वारा आंचलिक देवी देवताओं के पूजन का वर्णन यहाँ कुछ इस प्रकार है , "खांडा गाँव जाकर सिउनारायन गोसाईं को बुलाया , उसे बीस रूपये और दाल-चावल , हल्दी, गुड़ का सीधा दिया। उससे उसने मलइहा माई की पूजा कराई और शुद्ध बकरी के दूध से निकाली गई पाव भर मलाई का भोग चढ़ाया।"6

इस कथा में गाँव के आम परिवेश में जी रहे जीवन को भी लेखक द्वारा , पात्रों की सरल दिनचर्या को बता कर दर्शाया गया है।

"जब मोहनदास घर पहुँचा तो उसने देखा कि कस्तूरी ने पूरा आंगन गोबर से लीप रखा है , माँ

पुतली बाई सूपे पर मतीरा, लौकी, खरबूज के बीज फैला कर अपनी उंगलि यों से टटोल कर उन्हें बीनने में लगी हुई है , बाप काबादास परछी के कोने में बांस की कमटियां निकालने में व्यस्त है।"7 गाँव में चारों तरफ समस्याएँ एक सी नहीं होती शहरों की तरह व्यभिचार की जड़ें यहाँ भी पैठ जमाए होती हैं। निचले तबके की स्त्रियों को गाँव के धनी व ऊँचे तबके के पुरूष वर्ग द्वारा अपनी सम्पत्ति समझना एक बहुत बड़ी समस्या का रूप धरती है। इस कहानी 'मोहनदास' में भी लेखक ने चूँकि 21वीं सदी के भारत का दर्शन कराया, फिर भी उसमें यह समस्या जस की तस ग्रामीण निम्न तबके की स्त्रियों के सामने खड़ी बताई। गाँव में इस समस्या को लेखक ने कुछ यूँ बताया है, "कस्तूरी इन दिनों अपनी हिफाजत में हमेशा कछनी में हंसिया खोस कर रखती थी।...और अरसे से गाँव के ठकुरान-बंभनान शोहदों की नजरें गिद्ध की तरह उस पर गड़ी हुई है।"8

चूँकि यह कहानी पूरी तरह से एक गाँव के निचले तबके के व्यक्ति की है और वह बी.ए. की परीक्षा में अव्वल आया पर फिर भी अपने जीवन को शिक्षा के आधार पर सुधार नहीं पाया, क्योंकि लेखक ने यहाँ गाँव का एक काला , धूसर चेहरा भी दिखाया , जिसमें उसकी पहचान पर प्रश्न चिह्न लगाया गया और उसकी 'पास' की गई नौकरी की परीक्षा में उसे भ्रष्टाचार के चलते गाँव के सरपंच, गाँव के मुखिया , गाँव के रहने वाले पुलिस के ओहदेदार व्यकितयों द्वारा छला गया। साथ ही साथ उसके जीवन यापन के सभी रास्ते जब उस नौकरी को पाने में हुई मुश्किलों में उलझे तथा उसका जीवन जब उस छलावे के कारण टूटी हड्डियों , फटे कपड़ों, कटे होठों और मार व दर्द सहते शरीर से त्रस्त होने लगा तब लेखक स्वयं ने इस ग्रामीण सीधे सादे उच्च शिक्षित बेरोजगार द्वारा ही कहलवा दिया कि , "जिसे बनना हो बन जाए मोहनदास। मैं नहीं हूँ मोहनदास। मैंने कभी कहीं से बी.ए. नहीं किया। कभी टॉप नहीं किया। मैं कभी किसी नौकरी के लायक नहीं रहा। बस मुझे चैन से जिंदा रहने दिया जाय। अब हिंसा मत करो। जो भी लूटना है लूटो। अपने अपने घर भरो। लेकिन हमें तो अपनी मेहनत पर जीने दो। काका, आप लोग मेरा साथ दो।"9

निष्कर्ष

साहित्य का गाँव हर रंग लिए होता है, समाज को उसकी जड़ों में लग रही दीमक की ताकत का अंदाजा कराने वाला होता है। कहानियों का गाँव सिर्फ साहित्य के कलावाद को पुष्ट नहीं करता बल्कि ग्रामीण परिवेश द्वारा भारत की आत्मा का दुख व भारत की जड़ों को खोखला होने से बचाने के लिए पाठक वर्ग के सामने लाया जाता है और यही कार्य 'मोहनदास' द्वारा ग्राम पुरवनरा द्वारा, भ्रष्टाचार से पीड़ित ग्रामीण उच्च शिक्षित व्यक्ति द्वारा, रक्षक के भक्षक बन जाने द्वारा एवं अपने गरीब पति की शक्ति बन खड़ी 'कस्तूरी' द्वारा उदय प्रकाश ने कर दिखाया।

संदर्भ ग्रंथ

1 वही, पृ. 268।
2 'मोहनदास, वाणीप्रकाशन, संस्करण 2013, पृ. 28।
3 वही, पृ.15-16।
4 वही, पृ. 17।
5 वही, पृ. 68।
6 वही, पृ. 71।
7 वही, पृ. 23।
8 'मोहनदास, वाणी प्रकाशन, सं. 2013 पृ.क्रं.71
9 'मोहनदास, वाणी प्रकाशन, सं. 2013 पृ.क्रं.85-86